

## उत्तर

1. मैडम क्यूरी को रसायन विज्ञान का नोबेल पुरस्कार मिलने के शताब्दी वर्ष के अवसर पर।
2. मैडम क्यूरी के नाम। पहला नोबेल भौतिकशास्त्र में 1903 में उनके पति पियरे क्यूरी तथा गुरु हैनरी बेक्वेरेल के साझे में रेडिएशन विकिरण (सिद्धान्त) की खोज तथा दूसरा वर्ष 1911 में दो नए रेडियोएक्टिव पदार्थ पोलोनियम और रेडियम की खोज करने के कारण।
3. मित्र (इजिप्शियन) शब्द 'केम' से जिसका अर्थ होता है 'पृथ्वी'।
4. नील के पीधे (इंडिगोफेरा टिक्टोरिया, ऊँचाई लगभग 1-3 मीटर) में इंडीगेरान नामक गंध पायी जाती है जो नील की पत्तियों में विद्यमान रहता है। पत्तियों में रंगहीन और घुलनशील ग्लाइकोसाइड इंडीकेन पाया जाता है जो पानी की आक्सीजन से नाता जोड़कर नीला रंग बनाता है। इसी नील को सुखाकर चूर्ण के रूप में भी तैयार कर लिया जाता है जो बाद में आवश्यकतानुसार पानी में घोल लिया जाता है।
5. ओजोन गैस
6. इथाईलीन गैस
7. ब्यूटेन तथा प्रोपेन गैस
8. कार्बन टेट्राक्लोराइड
9. आक्सीजन तथा एसीटिलीन गैस
10. क्लोरीन
11. लिपिड
12. डी - ग्लूकोस
13. डेयरी रसायन
14. फ्रक्टोस
15. मरक्यूरिक सल्फाइड
16. फार्मिक एसिड
17. लैक्टिक एसिड
18. कार्बन
19. मेटानिल अम्ल
20. लैंड क्रोमेट, मरक्यूरिक आयोडाइड तथा वाहनों से निकले बेकार तेल के अंश।
21. पाइरेथ्रिन। गुलदाऊदी नामक पुष्प (किसैन्थेमम सिनेरीएफोलियम) से 'पायरेथ्रम' रसायन प्राप्त होता है, उसमें पाइरेथ्रिन एक प्रमुख घटक है।
22. पोटैशियम सायनाइड
23. विटामिन बी12, सायनोकोबैल्मिन
24. मीथेन ( 65% )
25. हाईड्रोजन गैस।
26. लगभग 31 प्रतिशत।
27. लगभग 21.02 प्रतिशत।
28. लगभग 34,662 वर्ग किमी।
29. बुर्राँश का वृक्ष (रोडोडेन्ड्रोन आर्बोरियम)।
30. सीक्योआ जाइगैटियम'। इसकी ऊँचाई लगभग 120 मीटर है। इसे 'कोस्टल रेड वुड ऑफ कैलिफोर्निया' भी कहा जाता है।
31. विक्टोरिया रेजिया' नामक जलीय पौधा। यह पश्चिम बंगाल में पाया जाता है। इसकी पत्तियों का व्यास लगभग 6 फुट होता है।
32. बूल्फिया' नामक जलीय पौधा। इसका व्यास लगभग 0.1 मिलीमीटर तथा आकार चीलाई के गोल दाने के समान होता है।
33. रैफ्लेसिया ऑरनील्डाई'। इसका व्यास लगभग 1 मीटर तथा भार लगभग 8 किलोग्राम होता है। यह इंडोनेशिया के वर्षा वनों में पाया जाता है। इससे सड़े मौस जैसी गंध आती है।
34. लोडोयसिया माल्डीविका'। यह भारत में केरल में पाया जाता है। इसे डबल कोकोनट भी कहते हैं। इसका भार लगभग 18-20 किलोग्राम तक होता है।
35. अंजन (हार्डविकिया बाइनेटा)। इसकी ऊँचाई लगभग 24-30 मीटर होती है तथा यह भारतीय उपमहाद्वीप में पाया जाता है।
36. ओकरोमा लैगोपस बाल्सा। यह मध्य तथा दक्षिणी अमेरिका में पाया जाता है।
37. लगभग 1 प्रतिशत (न्यूजीलैंड के आकार जितना)।
38. सिंकोना नामक झाड़ीनुमा वृक्ष जो मूलतः एंडीज में पाया जाता है और जावा तथा भारत आदि में छाल प्राप्त करने के लिए इसे उगाया जाता है। इसकी छाल से 'क्यूनीन' नामक रसायन प्राप्त होता है जिसे मलेरिया बुखार के लिए सर्वोत्तम औषधि माना जाता है। सिंकोना वृक्ष का नाम पेरू के स्पैनिश वॉयसराय की पत्नी चिन्कॉन (1576-1639) के नाम पर रखा गया है क्योंकि उस वृक्ष की छाल ने उनके बुखार को ठीक कर दिया था।
39. लगभग 1 अरब 86 लाख।
40. लगभग 30 करोड़।
41. 'टेसू' (पलाश) के वृक्ष को, अपने नारंगी-लाल रंग के भड़कीले फूलों के कारण। इसका वैज्ञानिक नाम ब्यूटिया मोनोस्पेर्मा है।
42. विशाल बरगद\* (फाइकस बेंगालेन्सिस)। यह वृक्ष कोलकाता के निकट, हावड़ा शहर में आचार्य जगदीश चन्द्र बोस इंडियन बॉटनिक गॉर्डन में है तथा लगभग 250 साल पुराना है।
43. पीपल (फाइकस रिलिजिओसा) अथवा बरगद (फाइकस बेंगालेन्सिस) जैसे वृक्षों को संरक्षित करने के लिए जन जागरण। प्रथम वैज्ञानिक तथ्य यह है कि इस कुल के वृक्षों की जड़ें दूर-दूर तक फैल कर भूमि कटाव को रोकती हैं। दूसरा, ये दोनों वृक्ष सबसे अधिक मात्रा में वातावरण में प्राणवायु (ऑक्सीजन) छोड़ते हैं। यदि धार्मिक अनुष्ठान से यह वृक्ष जुड़े न होते तो शायद इनपर भी निर्मम आरियाँ चल जातीं।
44. कश्मीर विल्लो (सालिक्स अल्बा)।
45. औवले' के वृक्ष के नीचे (इंडियन गूजबेरी, फिलैथस एम्बेलिका)। इस वृक्ष के संरक्षण हेतु। यह विटामिन सी का सर्वोत्तम स्रोत है जो शरीर की प्रतिरोध क्षमता को

बढ़ाता है।

46. शीशम (डलबंरिया सिस्सो), टीक (टेक्टोना ग्रॉडिस), देवदार (सेडरस देवदारा)।
47. आम की लकड़ी (मैंगीफेरा इंडिका)।
48. रबर<sup>10</sup> के वृक्ष से (हेविआ ब्रासिलिएन्सिस)। इस वृक्ष की ऊँचाई लगभग 44 मीटर होती है। इसके दूध जैसे सफेद द्रव का

शोधन कर रबर प्राप्त किया जाता है।

49. चीड़<sup>11</sup> के वृक्ष से (पाइन)। इस वृक्ष से प्राप्त लीसा (चिपचिपा पदार्थ) के शोधन से तारपीन का तेल प्राप्त होता है।
50. वृक्षों के संरक्षण से। यह आंदोलन सन् 1730 में जोधपुर में शुरू हुआ था। बाद में 1970 में उत्तराखण्ड के

चमोली जिले में हुआ। सुन्दरलाल बहुगुणा, चंडी प्रसाद भट्ट आदि इसके प्रमुख आंदोलनकर्ता हैं।

---

एसोसिएट प्रोफेसर (अवकाश प्राप्त)  
प्राणी विज्ञान विभाग,  
डी. बी. एस. (पीजी)कालेज,  
देहरादून  
सचिव, भारतीय विज्ञान लेखक संघ,  
उत्तराखण्ड प्रभाग